International Journal of Applied Research 2016; 2(10): 216-219

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(10): 216-219
www.allresearchjournal.com
Received: 03-08-2016
Accepted: 04-09-2016

डॉ. उत्तम पटेल
एम.ए.; बी.एड्.; एम.फिल्.; पी-एच.डी.; यूजीसी नेट एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला-वलसाड-396050 गुजरात, भारत

Correspondence
डॉ. उत्तम पटेल
एम.ए.; बी.एड्.; एम.फिल्.; पी-एच.डी.; यूजीसी नेट एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला-वलसाड-396050 गुजरात, भारत

रमाकांत रथ की राधा

डॉ. उत्तम पटेल

सारांश
राधा और श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति और साहित्य के रग-रग में समाये हुए पात्र हैं। राधा तो श्रीकृष्ण की भक्ति के प्रतीक के रूप में अवतीर्ण होती है। संस्कृत में जयदेव ने गीत-गोविन्दम् के द्वारा श्रीकृष्ण भक्ति प्रवाहित की। आदिकाल में मैथिल कौकिल विद्यापति ने राधा-कृष्ण के स्वच्छन्द श्रृंगारी चित्रण किया। भक्ति काल में सगुण भक्ति में एक धारा श्रीकृष्ण भक्त कवियों की रही। प्रेमलक्षणा भक्ति के लिए सूरदास ने राधा का वर्णन किया। घनानंद और मीरा भी श्रीकृष्ण के श्याम रंग में डूब गए। रीतिकाल में राधा और कृष्ण सामान्य नायक-नायिका बन कर रह गए। किन्तु आधुनिक काल में 'प्रियप्रवास', 'कनुप्रिया' आदि काव्यों के माध्यम से पुनः अवतरित हुई। राधा-श्रीकृष्ण के चरित्र से पूरा भारतीय साहित्य आलोडित हुआ। उडिया के प्रसिद्ध कवि रमाकांत रथ भी इससे बच न सके। अतः उन्होंने 'श्रीराधा' के रूप में प्रेम दीवानी राधा को एक नवीनतम व्यक्तित्व प्रदान किया।

कुट शब्द: राधा, श्रीकृष्ण, स्मृति, अनन्य प्रेम

प्रस्तावना
'श्रीराधा' (1990) उडिया के प्रसिद्ध कवि रमाकांत रथ रचित मुक्तक काव्य है। यह नारी-प्रेम की अनुपम रचना है। जिसमें कवि ने राधा को नायिका के रूप में चित्रित किया है। नायिका राधा का कृष्ण से असीम जुड़ाव है इसलिए तो वह कहती हैं-

"मानों आने की खबर
सुनने को काफी पहले ही
अनजाने में अपने, तुम आ चुके हो
यह जान भी गयी थीं।"[1]

कृष्ण तो इसे एक बार स्वप्न में दिखे थे, जिसके बाद तो उसने आदि-अंतहीन रास्ते पर डग बढ़ा दिए थे। उसे पता है कि कृष्ण एक न एक दिन चला जायेगा, जो वापस नहीं आयेगा। उसे यह भी पता है कि वह जो चुन रही है उसे आजीवन भोगना होगा। वह उस कृष्ण से प्यार करती है जिसे न तो वह विस्मृत कर पायेगी और न ही प्राप्त कर सकेगी। वह तो कृष्ण से कहती है कि मैं अपनी कामनाओं का भूत-भविष्य-वर्तमान तुम्हें सौंपकर कहाँ रहूँगी। कृष्ण तो राधा की हताशा का परिपूर्ण रूप है। वह चाहती है कृष्ण की बाँहों में बाँहे डालकर नाचती रहना, चाहे कृष्ण को उसके नाम का स्मरण रहे या न रहे। अतः वह कहती है-

"तमे आजि आस किम्बा आस कल्पना-कल्पांतर परे
तम लागि मो रोमांच चिरकाळ स्थायी।"
(तुम आज आओ या आओ
कल्प-कल्पांतर के बाद
तुम्हारे लिए मेरा रोमांच है चिरस्थायी।)[2]

वह नित्य कंगालिनी है। अज्ञानी नारी है। उसके भाग्य में तो सिर्फ एक खाली जगह बनकर रह जाना लिखा है। न तो उसके हाथों में दम है और न मन में दंभ। कृष्ण के लिए उसके मन में जरा-सी आशा बची हुई है, वह भी मानो लुप्त होना चाहती है। अतः कृष्ण से कहती है कि अगर तुम्हें रास-लीला रचानी हो तो यमुना के किनारे ही नहीं, मेरे भीतर भी असीम रिक्त जगह है। फिर भी आश्चर्य-

"तुम्हारे नाम का
उच्चारण करते ही पता नहीं क्यों
जीभ सूख जाती है मेरी अचानक?"[3]

राधा ने तो अपना सब कुछ निराकार कृष्ण को समर्पित कर दिया है। प्रेम की वाणी मौन होती है। मिलने पर कृष्ण द्वारा एक भी बात न कहने पर भी वह समझ जाती है कि उसके स्वर में तो सात सिंधुओं की गर्जना की प्रबलतम पुकार है। अतः वह कृष्ण की निःशब्द ध्वनि भी सुन लेती है—

"तुम्हारा कंठ बाष्परूद्ध हो जाने पर
शुद्ध निःशब्दता की भाँति हर बार में
आती हूँ तुम्हारी निःशब्द पुकार सुन।"[4]

जब कृष्ण ने उससे कहा था कि अपने प्राण रहने तक वे राधा के अतिरिक्त किसी और को नहीं चाहेंगे, तभी राधा समझ गई थी कि वे झूठ बोल रहे हैं क्योंकि-

"तब तक उन्हें मालूम नहीं था किस तरह
बातें कही जाती हैं बिना कुछ कहे किसी से।"[5]

रथ की राधा अस्तित्व हीन नहीं होना चाहती। ये कृष्ण की शून्यता में समा कर भी अपना 'स्व' बनाये रखती है। "'श्रीराधा' की राधा एक ऐसी स्त्री है जो महानता के मलबे में से अपने अखंडनीय स्वत्व की तलाश में है। यह तलाश समय के विराट उजाड़ में से अपने स्त्रीत्व के सार को खोजने की है।"[6]

कृष्ण के न मिलने से उसकी देह में बड़ा सन्नाटा है। उसका तो मानना है कि मत्यु से मृत्यु तक एकाकी चलना पड़ता है।[7] वह कृष्ण के प्रति प्रतिबद्ध है। वह तो उसे काल-कालांतर तक जकड़े रखना चाहती है। वह तो ऐसे अनन्य मिलन की कामना करती है कि कृष्ण को स्पर्श करने पर वह उसके रक्त में समा जाये। तो कभी वह यह सोचती है-

"क्या केवल रिक्त स्थान दिखता है यदि
अनंत काल तक कोई देखे खुद ही खुद को?"[8]

मिलन के क्षणों की स्मृति ही उसके जीने का आधार है। सारी अर्धगठित कामनाओं को एकत्र कर कृष्ण की अँगुलियों में उलझा देती है वह। उसका तो यह कहना है कि एकांतता ईश्वर को झेलनी पड़ती है। वह तो अगोचर आकांक्षा से राधा का आँचल खींचता है। कृष्ण की याद में वह आँसू बहाती है किन्तु वह तो आँसूओं का मूल्य ही नहीं समझता-

"तुम तो रोये नहीं कभी, कैसे समझोगे
मैं बूँद भर आँसू क्यों आती हूँ बहती हुई।"[9]

राधा की तो कृष्ण से यही अनन्य कामना है कि उसके लिए सिर्फ एक क्षण छोड़ दो, किन्तु उस एक क्षण में उसे आकाश की तरह छाये रहना है और वह भी आदि से अंत तक। कृष्ण तो राधा के प्यार के कारण घनीभूत नील हो गए हैं क्योंकि राधा नहीं चाहती कि वह किसी दूसरे रंग के बनें। वह तो अपने जीवन काल की अंतिम क्षणों को कृष्ण को बाँहों में भरना चाहती है। वह कृष्ण को बाँधकर, रोककर रखना नहीं चाहती। वह तो चाहती है-

"तुमसे बस इतना ही कहती कुछ पल के लिए
खड़े रहो मैं जहाँ हूं उस जगह।"[10]

उसकी हर चुनौती कृष्ण के पास ही खत्म होती है। उसे प्रतीत होता है कि उसका बार-बार जन्म लेना और मरना कहीं लुप्त हो गया है। नौका विहार करने के बाद तो कृष्ण से विलग होते, घर जाते समय उसे लगता है- ऐसा लगा शरीर में अब जान नहीं है। राधा को उसकी एक सहेली ने पूछा था कि वह कृष्ण से इतना प्यार क्यों करती है? उसकी हरेक रोम से मेरे जन्म-जन्मांतर की सहेजी सांत्वना स्रोत सी फूटती थी। कृष्ण से उसकी चाह है –

"तुम्हारी जरा और मृत्यु के लिए सर्जित देह पर
दूरवर्ती सपनों के वायदे लिख दूँ।"[11]

क्योंकि वह तो सूरज के पीछे रह कर इशारा करता है। कृष्ण के विरह में राधा अपनी प्रत्येक हताशा को भूल जाती है। उसकी आत्मा को अब सिर्फ प्रतिध्वनि-सी सुनाई देती है जो केवल उसकी और उसके लिए है। उसकी अपनी भाषा है। इसलिए तो-

"जिस रात
कोई न हो उस रात स्वयं से बतियाने की।"[12]

मुंदरी पहनाने पर राधा द्वारा यह पूछने पर कि क्या मैं तुम्हें पत्नी सी दिखती हूँ, कृष्ण ने कोई उत्तर न देकर-बस आँखें मूँदे मुँह छिपा लिया मेरी छाती में / मैंने समझा मेरी सारी आयु को उन्होंने / सजा दिया गहरी उसाँसों से।[13] कृष्ण से मिलन के क्षणों याद करते हुए राधा कहती है-

"तुम जिस वक्त तुम नहीं होते
तब होते खूब निकट हो, इसलिए
क्या फर्क पड़ता है केवल एक रात्रि की लक्ष्य भ्रष्टता में?"[14]

उसकी अनुभूति तो गहन है अतः उसे लगता है कि कृष्ण तो बार-बार छुप छुप कर उसके पास आता है। यह राधा तो साहसी है। समाज का उसे कोई भय नहीं। अतः वह कहती है-

"कल सुबह जो लाँछन मुझ पर
लगेगा उसका क्या अर्थ होगा मेरे लिए?
क्या मैं कुछ माँग रही हूँ दुनिया से जो
उठ-बैठ करूँ उसके निर्देश पर?"[15]

क्योंकि लोगों ने मुझ पर जिस दिन यह कलंक लगाया कि मैं व्याभिचारिणी हूँ, कुलनाशिनी हूँ तब से मैं राधिका बन गयी-

"उस दिन से मैं बनी राधिका
रसिकाओं के शीश की मणि।"[16]

तब वह आनंदित हो, हताशाओं को दूर कर, पुलकित हो कहती है कि मैंने कई जन्मों में जो पुण्य कार्य किए थे उसका ये अपयश मिला है-

"मेरा भाग्य मेरा अपना है
काफी दिनों तक मैं यही सोचा करती थी।
भला मैं कैसे जानती कि उसे भी संसार
अपनी किसी सूची में जोड़ लेगा?"[17]

राधा का पति तो बुद्धिहीन है। अतः वह कहती है कि हाय रे विधाता,कैसा बुद्धि हीन पति तुमने मेरे भाग्य में मढ़ दिया जो-

"जो मेरी अविश्वस्तता का सबूत ढूँढता है
मेरे शरीर में वह भी दिन के समय।"[18]

कृष्ण की मृत्यु पर राधा तो आनंदित होती है क्योंकि जीवित, मूर्त कृष्ण पर तो सभी के अधिकार थे किन्तु अमूर्त कृष्ण तो सिर्फ और सिर्फ उसी का है, जिसे वह पूर्ण रूप से पा लेती है-

"यदि तुम उनके लिए न मरे होते मैं
भला पूरी तरह कैसे पा सकती थी तुम्हें?"[19]

इस समापन अंश में तो रमाकांत रथ ने 'राधा को एक नया विन्यास दिया है।'[20] इसीलिए तो कृष्ण के लौटने की बात पर सभी उतावले हो उठते हैं किन्तु राधा तो चाहती थी कि वह न लौटे।

वह तो अपना भस्मित भविष्य नीला कर उसे चंदन से चित्रित करती है। राधा तो कृष्ण के अभावों की इच्छा शक्ति है। राधा को भी आशा है कि उसकी कामना का, उत्कंठा का प्रतिदान उसे जरूर मिलेगा। वह कहती है कि अगर तुम्हें ये पुराने स्थान मिलन के योग्य नहीं लगते तो तुम कहते वहाँ पर इस नदी के उपर से आकाश उठाकर उस जगह पर रख देती। राधा जानती है कि कृष्ण तो चाँदनी से स्वच्छ पूर्व दिशा से आयेगा। राधा तो कृष्ण की दिन-रात राह देखती है किन्तु वह नहीं दिखते। क्योंकि वहाँ चंचलता है, जिसमें कृष्ण तो पूरी तरह टिक नहीं सकते। किन्तु उसके न आने पर, कृष्ण का मिलन तो राधा के लिए महज बाट जोहना रह जाता है। इसलिए तो वह उससे कहती है कि तुमने क्या इस जन्म के पूर्व की जिंदगी किसी अतृप्त बाट जोहने में बितायी थी क्या? राधा

जानती है कि काल प्रतिकाल बहने पर भी कृष्ण से उसकी भेंट होने वाली नहीं है।

कृष्ण तो राधा की आँखों में भर कर आँसू बनकर आवाजाही करता है। ये दीखे या न दीखे किन्तु कल्पनातीत किसी आनंद भाव से राधा के पास आता अवश्य है। कृष्ण की अनुपस्थिति में भी उसकी उपस्थिति रहती है। और राधा जब कृष्ण-कृष्ण पुकारेगी और तुम दिखने लगोगे वहाँ भी जहाँ तुम नहीं होगे। वह तो स्वयं को छोटे छोटे कणों में बाँट-बाँटकर सबके भाग्य में कुछ न कुछ रख जाता है। कृष्ण ऐसे हैं कि जिसे राधा पाकर भी नहीं पा सकती और न पाकर भी पा लेती है। श्री राधा के कृष्ण स्थूल भी हैं और सूक्ष्म- दोनों हैं। इसीलिए तो राधा कहती है-"तुम हो अशरीरी, फिर भी मेरे पास सदा रहते हो।"[21]

असंख्य युगों में, युगांतरों में व्याप्त होकर भी कृष्ण तो अकेला है। राधा सोचती है कि मेरे न होने पर तुम्हारे रक्त-माँस के शरीर को कौन सहला देगी? वह निराश है क्योंकि "एक चेहरे को भी अपना बना रख सकने की पात्रता /इतने अरसे तक नहीं मिल पाई।"[22] "वह निराश हो सकती है तो केवल इसलिए, कि कृष्ण को जिस सहानुभूति तथा संवेदना की आवश्यकता थी, वह उसे दे न सकी। न दे पाने की पीड़ा कुछ लोगों के लिए न ले पाने की पीड़ा से बड़ी होती है।"[23]

निष्कर्षः इस प्रकार 1.इस काव्य की राधा अभी दैनंदिन के जीवन व्यापार से पूरी तरह ऊपर नहीं उठी है। यह सामान्य मानवी है। वह तो अंतिम सांस तक कृष्ण से प्यार करती रहती है चाहे वह उसे मिले या न मिले। 2. राधा की शुद्ध कामना है, जिसमें कभी न समाप्त होनेवाली निराशा है किन्तु गौरव से युक्त। 3.राधा में कामना की निष्फलता को स्वीकार करने का साहस है। क्योंकि उसे पता है कि कृष्ण से उसका मिलन कभी न होगा। उसका विरह अनंत है। अतः वह प्रेम का मूल्य चुकाती है। 'श्रीराधा' में राधा के प्रेम की एकांतिक स्थिति का चित्रण है। यह राधा चिड़चिड़ी नहीं, बल्कि उदात्त है। इस राधा का रूप मानवीय अधिक है। कवि रमाकांत रथ की राधा विषयक अनुभूति में सागर–सी गहराई है। यही कारण है कि 'श्रीराधा' की राधा "अपने आप से परे एक व्यक्तित्व में बदल जाती है।"[24]

संदर्भ-संकेत

1. रथ, रमाकांत (1990), श्रीराधा, पृ.7, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
2. वही. पृ.43
3. वही. पृ.15
4. वही. पृ.19
5. वही. पृ.127
6. दास, हरप्रसाद (2003), सरस्वती सम्मान 1991-2000, के.के.बिरला फाउंडेशन, पृ.179, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
7. रथ, रमाकांत (1990), श्रीराधा, पृ.219, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
8. वही. पृ.29
9. वही.
10. वही. पृ.227
11. वही. पृ.63
12. वही. पृ.123
13. वही. पृ.146
14. वही. पृ.89
15. वही.पृ.111
16. वही. पृ.117
17. वही. पृ.215
18. वही. पृ.115
19. वही. पृ.253
20. प्रेमशंकर (2006), भारतीय स्वच्छंदतावाद और छायावद, पृ. 300, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
21. वही. पृ.137
22. वही. पृ133
23. रथ, रमाकांत (1990), श्रीराधा, पृ.266, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
24. वही. पृ.264